6.2.1.

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

वैदिक अध्ययन केन्द्र

योजना-

पृष्ठभूमि-

विद् धातु से वेद शब्द निष्पन्न हुआ है, जिसके अनेक अर्थ हैं - ज्ञानात्मक, लाभात्मक, सत्तात्मक एवं विचारात्मक इत्यादि वैदिक वाङ्मय में संहित, ब्राह्मण,आरण्यक, उपनिषद, सूत्र भाष्य के साथ वेदांग साहित्य – शिक्षा, कल्प, ज्योतिष , निरुक्त, छन्द एवं व्याकरण भी अन्तर्भुक्त हैं।

भारतीय ज्ञानपरम्परा में आगम (वैष्णव, शैव और शाक्त), वास्तुकला, ज्योतिष, एवं खगोल-विज्ञान, ब्रह्माण्ड, चिकित्सा, शल्यचिकित्सा, पशुचिकित्सा, सैन्य-रणनीति, योग, गणित, कृषिविज्ञान, धातुविज्ञान जैसे अनेक विषयों पर विशाल साहित्य का सृजन हुआ है, जिसकी आधारभूत सामग्री वैदिक चिन्तन के सातत्य में विकसित हुई है। सबसे रोचक तथ्य यह है कि पश्चिमी देशों में जब मूलभूत सिद्धान्तों को समझने के प्रयास हो रहे थे, उससे सदियों पूर्व हमारे प्राचीन भारतीय आचार्यों ने अपने विषय में अत्यधिक उत्कष्टता प्राप्त कर ली थी।

प्राचीन भारत में वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के उपयोग एवं प्रसार से सम्बन्धित अनेक साक्ष्य उपलब्ध हैं। प्राचीन भारत में उपलब्धियों एवं आविष्कारों की सूची विस्तृत है तथा उनको आज विश्वस्तर पर मान्यता भी प्राप्त है। वैज्ञानिकों, गणितज्ञों एवं चिकित्सकों का विश्वसमुदाय भारतीय ऋषि-परम्परा, बोधायन, आपस्तम्ब एवं कात्यायन जैसे प्रबचनकारों, भरतमुनि जैसे पंचम वेद के प्रणेता, दत्तिल एवं मतंगमुनि जैसे संगीतज्ञों के योगदान के साथ-साथ लगध, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्काराचार्य प्रथम एवं द्वितीय, सुश्रुत एवं चरक जैसे आयुर्विज्ञान के प्रणेताओं के योगदान से भी भलीभाँति परिचित है। भारत को केवल विज्ञान एवं प्राद्योगिकी की ही नहीं अपितु ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में 'विश्वगुरु' होने का गौरव प्राप्त है।

2.वैदिक अध्ययन केन्द्र की स्थापना का औचित्यः

यह सर्वविदित है कि राष्ट्र की गौरवशाली बौद्धिक परम्परा है, लेकिन राष्ट्र में प्रचलित शिक्षा प्रणाली हम सबको अपनी जड़ों परम्पराओं, संस्कृति और विज्ञान के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित करने में पूरी तरह सफल नहीं रही है। हमारे शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में डेमिक्रिटक्स, आर्किमिडिज, न्यूटन, प्लूटो आदि के विषय में तो विस्तार से पढ़ाया जाता है किन्तु महामुनि वेदव्यास, बौधायन, कणाद, मनु, पतंजलि, चाणक्य, ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य प्रथम एवं द्वितीय आदि के विषय में नहीं। इस महनीय बौद्धिक परम्परा पर नव्य-साहित्य का सृजन भी अत्यल्प हो रहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि भारतीय

Scanned by CamScanner

शिक्षा-प्रणाली में अधिका ग्रन्थ पा''चात्य केन्द्रित हैं। कई इतिहासकारों ने विभिन्न अकादमिक क्षेत्रों में गैर-पश्चिमी संस्कृतियों के वैज्ञानिक योगदान को विस्मृत कर देने की इस चूक को स्वीकार भी किया है।

आधुनिक भारत एवं प्राचीन भारत के ज्ञान के मध्य के इस अन्तर के कारणों की समीक्षा करने के लिए तथा उस अन्तर को पाटने के साथ-साथ अपनी अतीत की भव्य ज्ञानगाथा को पुनः स्थापित करने तथा अपने प्राचीन ज्ञान का पुनर्निर्माण करने के लिए कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है। प्राचीन वैदिक ज्ञान के अन्तर्विषयक अध्ययन एवं अनुसन्धान के द्वारा हम अपने राष्ट्रीय गौरव को, अपनी खोई हुई ज्ञान-सम्पदा को पुनः प्राप्त कर सकते हैं तथा सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए गौरवशाली ज्ञान परम्परा का प्रयोग कर सकते हैं।

3. लक्ष्य-

वैदिक अध्ययन केन्द्र सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में प्रसृत ज्ञान-विज्ञान के अक्षय भण्डार का अध्ययन एवं अनुसन्धान करेगा। आधुनिक ज्ञान को समृद्ध करने के लिए अपने प्राचीन ज्ञान को संरक्षित एवं प्रसारित करना इसका प्रधान ध्येय होगा। केन्द्र वैदिक साहित्य में व्याप्त अविवेचित एवं लुप्तप्राय हो रहे विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों को खोज करेगा तथा बहुविषयक नवीन अनुसन्धान का हेतु बनेगा। वैदिक विज्ञान को विस्मृत हो रही तत्कालीन उपलब्धियों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयास करते हुए यह केन्द्र वैदिक सिद्धान्तों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपयोगी व लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से अन्तर्दृष्टि के माध्यम से हमारे प्राचीन साहित्य का अध्ययन करेगा। केन्द्र द्वारा वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका के प्रकाशन के साथ-साथ वैदिक साहित्य सम्बन्धी नवीन अनुसन्धान पत्रों अथवा प्रबन्धों एवं पाण्डुलिपियों की सहायता से सम्पादित ग्रंथों का प्रकाशन भी किया जायेगा।

4. वैदिक अध्ययन केन्द्र की स्थापना का उद्देश्य-

उपर्युक्त पृष्ठभूमि के आधार पर वैदिक अध्ययन केन्द्र की स्थापना के निम्नलिखित उद्देश्य होंगे-

1. वेद विज्ञान के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी संस्थान के रूप में केन्द्र को प्रतिष्ठित करना।
2. वैदिक संहिताओं तथा अन्य सहायक ग्रन्थों में उपलब्ध विज्ञान के आधारभूत तथ्यों के गहन अध्ययनोपरान्त तत्सन्दर्भित ग्रन्थों को तैयार करना।
3. वैदिक ऋषियों द्वारा दृष्ट ज्ञान मीमांसा के आधार पर प्रयोगात्मक प्रक्रिया के माध्यम से विज्ञान-दर्शन के सन्दर्भित परिणाम प्रस्तुत करना।
4. वैदिक साहित्य का विस्तृत एवं विवेचनात्मक अध्ययन करना तथा उसको मौखिक पाठ परम्परा, दर्शन के साथ-साथ वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति के विज्ञान का अध्ययन एवं अनुसंधान करना।

Scanned by CamScanner

5. भारत की बौद्धिक विरासत का अध्ययन, शोध एवं प्रवर्तन करना।
6. वैदिक ऋषियों एवं विद्वानों के तर्कसंगत और वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्रोत्साहित करना तथा जिज्ञासुओं के मध्य हमारी विरासत में खोए हुए विश्वास को पुनर्जीवित करना। उदाहरणार्थ- सौ वर्षों की दीर्घायु की प्रथम वैज्ञानिक परिभाषा, सृष्टि, काल, दिक, नक्षत्र, अन्तरिक्ष, पृथिवी आदि की प्रथम वैज्ञानिक परिभाषा, वैदिक ब्रह्माण्ड के मूलभूत आधारतत्त्व, वैदिक काल की मानक ईकाईयाँ आदि।
7. भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना एवं आधुनिक वैज्ञानिक परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता सिद्ध करना।
8. वैदिक विज्ञान पर आधृत संयुक्त शोध कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए राष्ट्रिय एवं अन्तरराष्ट्रिय प्रतिष्ठा के शोध संस्थानों के साथ सहयोग करना तथा छात्रों के लिए तत्सम्बद्ध विषयों को रोजगारपरक बनाना।
9. वैदिक स्तुतियों, अनुष्ठानों एवं योग के माध्यम से मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभावों पर अध्ययन के लिए इन पर केन्द्रय तन्त्रिका एवं न्यूरो मनोवैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए एक परिष्कृत अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशाला स्थापित करना।
10. वर्तमान समय के वैज्ञानिक अनुसन्धानों में लाभ के लिए वैदिक ज्ञान प्रणाली का व्यापक स्तर पर उपयोग बनाना।
11. वैदिक विज्ञान की सहायता से आधुनिक ज्ञान की स्थिरता की जाँच करना।
12. वर्तमान में भारतीय शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न वैज्ञानिक ग्रन्थों में वैदिक विज्ञान की अनुपस्थिति को दूर कर वेद-विज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रम सामग्री तैयार करना और वर्तमान पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने के लिए प्रयास करना।
13. प्रेरणादायक प्राचीन ज्ञान एवं तकनीक का उजागर करना, जिसमें प्रकृति के साथ समन्वयपरक दृष्टि से विचार किया जा सके।
14. संस्कृत विद्वानों एवं वैदिक विज्ञान में रुचि रखने वाले वैज्ञानिकों को एक साथ लाना, जो वैदिक विज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान के समन्वित संश्लेषण के लिए कार्य कर सकें तथा भारत के वैदिक पारम्परिक ज्ञान को बढ़ावा दे सके, साथ ही मानवजाति के उत्थान में सहायक हो सकें।
15. उचित समीक्षा के बाद वैज्ञानिक ज्ञान प्रणाली के विभिन्न पक्षों पर विभिन्न विद्वानों एवं विशेषज्ञों के द्वारा किये गये नूतनान्वेषणों के प्रतिवेदन आदि को प्रकाशित करना।
16. भारत एवं विदेशों के विभिन्न पुस्तकालयों, संग्रहालयों एवं व्यक्तियों से वैज्ञानिक महत्त्व की वैदिक पाण्डुलिपियों अथवा डिजिटल प्रतियों को एकत्रित करना तथा उन्हें भावी पीढ़ी के लाभ के लिए सम्पादित व प्रकाशित कर सुरक्षित करना।

Scanned by CamScanner

17. सामाजिक सामंजस्य एवं उत्तम जीवन निर्वाह के लिए भारतीय ऋषियों के वैज्ञानिक चिन्तन को अन्य देशों में प्रसारित करना।
18. वैदिक पाठ एवं अनुष्ठानों आदि के द्वारा वायु-प्रदूषण के उपचार की विधि का प्रयोग एवं प्रसार करना।
19. पारम्परिक वैदिक विद्वानों, अध्येताओं एवं अन्य योगदानकर्ताओं को संरेखित करने (एक साथ लाने) के लिए एक स्वस्थ एवं मुक्त वातावरण प्रदान करना।
20. लोक के मध्य संरक्षित वैदिक ज्ञान की मौखिक परम्पराओं का पता लगाना तथा उन्हें लिपिबद्ध कर संरक्षित करना।
21. वैदिक विज्ञान केन्द्र के लिए प्रयोगशाला से सम्बन्धित सभी उपकरणों की स्थापना करना।
22. चितिदर्शन तथा वैदिक यज्ञपात्र संग्रहालय की स्थापना करना।
23. Multimedia lab एवं रिकार्डिंग (ध्वन्यंकन) हेतु स्टूडियो की स्थापना करना।
24. माडल वैदिक पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपि केन्द्र की स्थापना करना जहाँ पर वैदिक साहित्य से सम्बन्धित सभी पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों को संग्रहीत कर स्थान दिया जा सके।
25. 'अनुवाद प्रकोष्ठ' की स्थापना करना जहाँ वैदिक साहित्य के ग्रंथों अथवा उपलब्ध प्रतिवेदनों का भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद काय का संचालन एवं प्रकाशन हो साथ ही वैदिक विद्वानों द्वारा अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं में किये गये अनुवाद कार्यों के हिन्दी में भी अनुवाद की व्यवस्था हो।
26. एक ऐसी विशिष्ट व्याख्यानमाला एवं कार्यशाला एवं परिसंवाद गोष्ठी, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करना। आयोजन से वैदिक साहित्य के विशिष्ट लगभग दो सौ बिन्दुओं का विशेष रूप से व्याख्यायित किया जायेगा साथ ही मोनोग्राफ के रूप में उसका एक निश्चित अवधि में प्रकाशन किया जायेगा।
27. भारतीय पारम्परिक वैज्ञानिकों के विभिन्न क्षेत्रों में किये गये योगदान को आधार बनाकर व्याख्यान-श्रृंखला का आयोजन किया जायेगा तथा मोनोग्राफ के रूप में इनका प्रकाशन भी किया जायेगा।
28. प्राचीन वैदिक व्याख्याकारों एवं पारम्परिक वैदिक विद्वानों के स्मृतियों में व्याख्यान-माला का आयोजन तथा उनके व्याख्यानों को मोनोग्राफ के रूप में प्रकाशित किया जायेगा।
29. वैदिक अध्ययन केन्द्र वेद विज्ञान में वर्तमान में हो रहे कार्यों को एक दूसरे के साथ साझा करने एवं उसके प्रचार-प्रसार करने हेतु एक अन्तरराष्ट्रिय वेद विज्ञान संघ का गठन करेगा, जिसके माध्यम से देश-विदेश में प्रत्येक दो वर्षों के अन्तराल पर व्यापक स्तर पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा।

Scanned by CamScanner

30. केन्द्र अपने स्तर से विविध प्रभागों के अनुरूप अलग से परियोजनाओं, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों को भी संचालित करेगा।

परिणाम एवं सम्भावित उपलब्धियाँ –

1. मौखिक एवं लिखित रूप से प्राप्त वैदिक साहित्य के सम्पूर्ण ज्ञानकोष का सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण, प्रदर्शन, प्रकाशन एवं उपलब्ध वैदिक श्रुतिपाठ को श्रव्य तथा दृश्य के क्रम में रिकार्डिंग किया जायेगा।
2. विशिष्ट व्याख्यान शृंखला, संगोष्ठी, कार्यशालाओं एवं वैदिक अनुष्ठानों का आयोजन करके वैदिक ज्ञान प्रणाली के महत्त्व के सम्बन्ध में प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करने के लिए प्रयास किये जायेंगे। केन्द्र में वैदिक प्रक्रियाओं की प्रदर्शनी आयोजित की जायेगी, जिसमें वैदिक अनुष्ठानों के साथ-साथ वैदिक यज्ञों में प्रयोग किये जाने वाले यज्ञपात्रों तथा चयन यागादि में प्रयुक्त विभिन्न चितियाँ के माडल (प्रारूप) का भी प्रदर्शन किया जायेगा। यह संग्रहालय भारत में अपने ढंग का संग्रहालय होगा जहाँ पर सम्पूर्ण भारत में प्रचलित अनेक प्रकार के यज्ञ पात्र प्रदर्शित किये जायेंगे, जो शाखा तथा सम्प्रदाय भेद के अनुसार होंगे।
3. केन्द्र द्वारा वैदिक अनुष्ठानों की प्रक्रिया, वर्तमान में उपलब्ध वेदों को सभी शाखाओं की पाठ परम्परा की तथा प्रारम्भिक रिकाडिंग के साथ-साथ विभिन्न विज्ञानों को प्रदर्शित करने के लिए एक आधुनिक डिजिटल मीडिया लैब का भी निर्माण किया जायेगा।
4. केन्द्र में एक प्रभाग बनेगा जिसमें 'वैदिक साहित्य में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा उनका आधुनिक विज्ञान से सम्बन्ध' विषय को वैज्ञानिक प्रणाली के अन्तर्गत प्रायोगिक रूप से प्रदर्शन किया जायेगा।
5. केन्द्र द्वारा भारत की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन कार्य इस दृष्टि को भी ध्यान में रखकर प्रारम्भ किया जायेगा कि कैसे सामाजिक सामंजस्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्त्व को उपस्थापित किया जाये।
6. वैदिक अध्ययन केन्द्र विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के साथ-साथ बाहरी शैक्षणिक जगत के साथ भी सतत सम्बन्ध बनाकर कार्य करने का इच्छुक है। विश्वविद्यालय के कला संकाय के विभिन्न विभागों के साथ सम्बन्ध, उनके पाठ्यक्रम में प्रामाणिक साहित्य उपलब्ध कराने के लिए महत्त्वपूर्ण होगा।
7. वैदिक विज्ञान केन्द्र के द्वारा वेद में निहित, योगविज्ञान, गणित, अन्तरिक्ष विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, कृषिविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, वास्तुविज्ञान, प्रौद्योगिकी के विभिन्न परिक्षेत्र, भाषाविज्ञान, ध्वनिविज्ञान, वैदिकस्वरविज्ञान, शब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र आदि विभिन्न विषयों का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन एवं अनुसन्धान समसामयिक परिप्रेक्ष्य में किया जायेगा।
8. वैदिक यज्ञों, मन्त्रपाठों के द्वारा जीवनदायिनी शक्ति का विकास करना।

Scanned by CamScanner

9. वैदिक यज्ञों, मन्त्रपाठों के द्वारा आधुनिक तकनीकों से विभिन्न क्षेत्रों में प्रदूषण निवारण के साथ जीवनदायिनी ऊर्जा का विकास करना।
10. विभिन्न वैदिक मंत्रपाठ के मन एवं शरीर पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों का वैज्ञानिक दृष्टियों से अध्ययन करना तथा उनका विभिन्न रोगों के निदान के लिए प्रयोग करना।
11. केन्द्र अपने समस्त प्रकल्पों को लेकर समय-समय पर विशेष प्रकार की कार्यशाला अथवा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करेगा।

वैदिक अध्ययन केन्द्र के विभिन्न प्रभाग-

वैदिक विज्ञान केन्द्र में निम्नलिखित सात विषय/प्रभागों में अन्तर्विषय अध्ययन एवं अनुसंधान प्रस्तावित है –

1. वैदिक साहित्य, अनुष्ठान एवं चित् (चेतनाशक्ति) विज्ञान प्रभाग
2. वैदिक भाषाविज्ञान, ध्वनिविज्ञान एवं शब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र प्रभाग
3. वैदिक आयुर्विज्ञान, मनोविज्ञान एवं योगविज्ञान प्रभाग
4. वैदिक स्थापत्य एवं अभियान्त्रिकी प्रभाग
5. वैदिक गणित, खगोल एवं पदार्थविज्ञान प्रभाग
6. वैदिक कृषि, पर्यावरण विज्ञान एवं प्रबन्धशास्त्र प्रभाग
7. सम्पादन, अनुवाद एवं प्रकाशन प्रभाग

(उक्त 07 प्रभागों का केन्द्रबिन्दु निम्नवत होगा-)

1. वैदिक साहित्य, अनुष्ठान एवं चित् (चेतनशक्ति) विज्ञान प्रभाग-

वैदिक ऋषियों ने ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण किया और कालान्तर में महर्षि वेदव्यास ने इस ज्ञान को अपने चार शिष्यों में प्रसृत किया। कालान्तर में वेदों के उपरान्त ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद् छः वेदांग एवं अन्य विपुलकाय वैदिक ज्ञानकोष वैदिक साहित्य के रूप में प्राप्त होता गया। यह केन्द्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगा, जिसमें इन वेदों की सम्पूर्ण पाठ परम्परा एवं भाष्य परम्परा को बनाये रखने के उद्देश्य से समग्र वेदशक्ति का अध्ययन किया जायेगा। इस प्रभाग का उद्देश्य संकायों एवं अन्य विश्वविद्यालयों को एवं शोध अध्येताओं को समग्र सामग्री उपलब्ध कराना है तथा उनका हिन्दी भाषा में अनुवाद करने के लिए भी प्रयास करना है, क्योंकि अधिकाधिक अध्ययन सामग्री अभी भी अनदित नहीं हो सकी है अथवा पाण्डुलिपियों मं उपलब्ध हैं। इस प्रभाग का द्वितीय घटक वैदिक अनुष्ठानों के विज्ञान से सम्बन्धि त है, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस प्रभाग के अनुसन्धाताओं एवं अध्येताओं की आवश्यकतानुसार केन्द्र द्वारा इन अनुष्ठानों का आयोजन करके इनके महत्त्व को समझाना, स्थायी रूप से इनके लिए प्रदर्शनियाँ लगवाना, एक मल्टीमीडिया केन्द्र की स्थापना तथा एक प्रयोगशाला का भी निर्माण कार्य किया जायेगा। वैदिक मन्त्रपाठ को श्रव्य एवं दृश्य के क्रम में तत्सम्बद्ध

Scanned by CamScanner

विद्वानों/वेदपाठियों को बुलाकर रिकार्डिंग की जायेगी। यह विभाग यह भी स्पष्ट करने का प्रयत्न करेगा कि कैसे वैदिक परम्परा के साथ अन्य सम्प्रदाय या परम्परायें विकसित हुई हैं। विशेष रूप से वैष्णव, शैव, शाक्त,कश्मीर शैवदर्शन, दक्षिण शैव के विभिन्न सम्प्रदाय तथा नाथ सम्प्रदाय के मूल तत्त्वों का वैदिक परम्परा के साथ किस तरह सम्बन्ध हैं। यह स्पष्ट किया जोयगा। यज्ञपात्र संग्रहालय का निर्माण किया जायेगा तथा अनेक वैदिक यागों एवं इष्टियों का आयोजन करना भी इस विभाग की जिम्मेदारी होगी। साथ ही पाठ परम्परा का संरक्षण, उसकी रिकार्डिंग तथा जनोपयोगी रूप से प्रस्तुत करने में यह विभाग शैक्षणिक जिम्मेदारी को स्वीकार करेगा।

2. वैदिक भाषाविज्ञान, ध्वनिविज्ञान एवं भाब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र प्रभाग-

यह प्रभाग वैदिक साहित्य, भाषा, ध्वनिविज्ञान एवं शब्द व्युत्पत्तिशास्त्र के विषयों पर सर्वोत्तम गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करेगा तथा प्रभाग में गहन शोध सुविधाओं को अन्तरराष्ट्रिय स्तर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के छात्रों के अध्ययन एवं शोध के लिए उपलब्ध करायेगा। प्रभाग में तीन वर्ग होंगे – वैदिक साहित्य एवं भाषा, ध्वनिविज्ञान एवं शब्द व्युत्पत्तिविज्ञान।

वैदिक साहित्य एवं भाषा प्रवर्ग वैदिक विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी संस्था बनने के लिए प्रयासरत रहेगा, जिसमें वेद के परम्परागत शाखाओं के साथ तत्सम्बन्धित साहित्य क साथ-साथ वैदिक भाषा काके आधुनिक पद्धति के आश्रय से व्याख्यायित एवं विकसित किया जायेगा। वैदिक पाठ संस्कृत के सर्वप्राचीन रूप में निबद्ध हैं, जो सभ्यता की सबसे प्राचीन मानकीकृत भाषा मानी गयी है तथा भारत में विकसित हुई है। इन्हें शब्दों के प्रारम्भिक कोष के रूप में भी देखा जा सकता है, जिनमें से अनेक शब्द आज प्रतिदिन की भाषा से लुप्त हो गये हैं, अनेक शब्दों के अर्थ समय के साथ परिवर्तित हो गये हैं। अतः संस्थान के लिए वैदिक भाषा के मूल तत्त्वों को तथा उसके मौलिक स्वरूप को जानना अत्यावश्यक है।

वैदिक उच्चारण पद्धति में ध्वनियों तथा उनकी प्रासंगिकता का संरक्षण आवश्यक है क्योंकि सही उच्चारण को जाने बिना मन्त्रों के सही अर्थ नहीं जाने जा सकते हैं और न ही उसके मानव शरीर व मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभावों को मात्रात्मक रूप में आंकलन ही किया जा सकता है। उदाहरण के लिए भाषा उच्चारण का तुरीय रूप तो आज ज्ञात है किन्तु उसकी पृष्ठभूमि एवं प्रभाव का अभी तक अध्ययन नहीं किया जा सका है। अतःवैदिक ध्वनियों का विश्लेषण करना तथा वैदिक ध्वनिविज्ञान के अन्तर्गत वैज्ञानिक रूप से उनका विशेष अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। यह भी रेखांकित करना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि किस प्रकार वैदिक ध्वनिविज्ञान ने समय बीतने के साथ भारत तथा यूरोप में बोली जाने वाली अन्य

Scanned by CamScanner

भाषाओं व बोलियों पर अपना प्रभाव डाला तथा उनमें कैसे परिवर्तन हुआ। इनका विशिष्ट अध्ययन वैदिक केन्द्र का यह प्रभाग करेगा।

3. **वैदिक आयुर्विज्ञान, मनोविज्ञान एवं योग विज्ञान प्रभाग-**

महर्षि व्यास ने समस्त ज्ञानराशि को चारवर्गों में वर्गीकृत किया जो ऋग्, यजुष, साम व अथर्व कहलाए। इनमें से अथर्ववेद एवं आयुर्वेद में उन्होंने प्रमुख रूप से तत्कालीन चिकित्साशास्त्र पर बल दिया। आयुर्वेद ऋगवेद का उपवेद कहलाता है। वैदिक आयुर्विज्ञान का वैदिक मन्त्रपाठ एवं अनुष्ठानों के साथ अन्योन्याश्रित एवं घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। केन्द्र का यह विभाग इस दृष्टि से अत्यन्त नवीन है। यह वेदगत मनोविज्ञान, योग विज्ञान तथा भस्म आदि से सम्बद्ध आयुर्विज्ञान के अध्ययन प्रामाणिक शोध के लिए सामग्रियों को उपलब्ध कराएगा साथ ही इससे सम्बन्धित अध्यापन के लिए पाठ्यक्रम का भी निर्माण करेगा। इस विभाग के माध्यम से आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के आधार पर भस्म आदि रसायन के निर्माण की प्रयोगशाला स्थापित की जा सकती हैं।

4. **वैदिक गणित, खगोल एवं पदार्थविज्ञान प्रभाग-**

गणित के साथ खगोल विज्ञान का मूल एवं विकास हमें सभी वेदों में दिखाई पड़ता है। वैदिक ऋषियों को दशमलव संख्या प्रणाली, पंचांग निर्माण, तीस दिनों के एक माह की गणना पद्धति तथा प्रथम अनुदैर्ध्य समय विभाजन प्रणाली के आविष्कार का श्रेय प्राप्त है। यद्यपि उन मूलभूत गणितीय सूत्रों एवं खगोलीय सिद्धान्तों को परिभाषित एवं स्थापित करने में कई सहस्र वर्ष लगे। संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद एवं 'अथर्व ज्योतिष' इत्यादि वेदांग ज्योतिष में समन्वय किया तथा लगध तथा उनके बाद के आचार्य ब्रह्मगुप्त एवं आर्यभट्ट को गणित एवं खगोलशास्त्र को विकसित करने का अवसर प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप 'वशिष्ठ संहिता, कश्यप संहिता, गर्ग संहिता, बृहद गर्ग संहिता इत्यादि ग्रन्थ प्रस्तुत हुये। पुराणों में भी बहुत सी सामग्री भरी पड़ी है। यह परम्परा बारहवीं शती तक चलती रही। बारहवीं शती में महेश्वर के पुत्र भास्कराचार्य-द्वितीय ने 'बीजगणितम्' तथा सिद्धान्तशिरोमणि इत्यादि ग्रन्थों की रचना की।

5. **वैदिक कृषि, पर्यावरण विज्ञान एवं प्रबन्धशास्त्र प्रभाग-**

सर्वप्रथम आचार्य विष्णुगुप्त ने कृषि विज्ञान एवं पशुपालन विज्ञान को एक पृथक एवं स्वतन्त्र संकाय के रूप में घोषणा की, जो पुष्ट करता है कि उस समय में भी इस विज्ञान की कितनी महत्ता रही होगी। हमारी पृथिवी विश्वम्भरा और वसुधानी है। यह प्रस्तावित प्रभाग कृषि पराशर, वृक्षायुर्वेद एवं कृषि तथा पशुपालन से सम्बन्धित अन्य मूलभूत शास्त्रों के आधार पर अध्ययन एवं शोध के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संचालन करेगा। पर्यावरण विज्ञान से सम्बन्धित तत्त्वों में से प्रथम वर्षा, बादल, बिजली, तूफान एवं भूकम्प आदि के विषय में भविष्यवाणी है, जिनका सम्बन्ध कहीं न

Scanned by CamScanner

कहीं खगोल विज्ञान एवं ज्योतिर्विज्ञान प्रभाग से भी है, वहीं दूसरी ओर प्राचीन काल में पर्यावरण को शुद्ध रखने के क्या उपाय थे, इस पर भी यह प्रभाग विचार करेगा। हमारे परम्परागत प्राचीन वैज्ञानिकों ने आधारभूत तथ्यों के आधार पर अनेक ग्रन्थों की रचना की। इनकी सहायता से केन्द्र के इस प्रस्तावित प्रभाग में अन्य प्रभागों की भाँति ही विभिन्न पाठ्यक्रमों का निर्माण एवं संचालन किया जायेगा।

6. वैदिक स्थापत्य एवं अभियान्त्रिकी प्रभाग-

यज्ञमण्डप, सभामण्डप, सभा एवं समिति के स्थल आदि के निर्माण की विधि ने वैदिक स्थापत्य एवं तकनीकी कलाओं के विषय में चिन्तन के लिए आधार प्रदान किया है। केन्द्र का यह प्रभाग स्थापत्य, नगर वास्तु, जल प्रबन्धन तकनीक, उड्डयन तकनीक आदि के विषय में व्यापक रूप से अध्ययन करेगा। देश के प्रमुख संस्थानों आई0आई0टी0, आई0आई0एम0 के वास्तुकला के छात्रों के लिए केन्द्र पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन करेगा, जिससे उन्हें वैदिक वास्तुविज्ञान एवं प्राचीन कलाओं आदि के विषय में विभिन्न जानकारियाँ प्राप्त हो सके।

महाभारत में वर्णित अर्थशास्त्र के मूल तथा विभिन्न देवताओं के चित्रण ने स्थापत्य कला तथा शास्त्र को आधार प्रदान किया, जो कि कालान्तर में विभिन्न ग्रन्थों के रूप में आकार लेता गया। उनमें से अधिकाधिक ग्रन्थ आज पूर्णरूप में उपलब्ध नहीं है।

7. सम्पादन, अनुवाद एवं प्रकाशन प्रभाग –

यह प्रभाग वैदिक विज्ञान केन्द्र का एक महत्त्वपूर्ण प्रभाग होगा, क्योंकि यह उपर्युक्त सभी छः विभागों के साथ इस रूप में संपृक्त रहेगा, जैसे वेद और वेदांग का सम्बन्ध। इसके अन्दर मुख्य रूप से चार प्रकल्प होंगे। प्रथम प्रकल्प के अन्तर्गत आलोचनात्मक पद्धति से सम्पादित तथा हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत ग्रन्थों का इस विभाग के द्वारा प्रकाशन के दायित्व का निर्वाह किया जायेगा जिसमें वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रथम विभाग के साथ यह विभाग समन्वयन करेगा। दूसरे प्रकल्प के अन्तर्गत यह विभाग ऐसे ग्रन्थों की अनुवाद की व्यवस्था एवं प्रकाशन करेगा जो ग्रन्थ भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में विशेष रूप से उड़िया, मैथिली, बंगाली एवं असमी भाषा में उपलब्ध नहीं है। तत् तत् प्रदेश के विद्वानों के साथ समन्वयन करते हुये इस लक्ष्य के साथ कि वैदिक साहित्य से सम्बन्धित प्रत्येक अध्ययन एवं अनुसंधान इस क्षेत्र विशेष के लोगों को भी सुलभ हो। ग्रन्थ निर्धारण की प्रक्रिया सलाहकार समिति के माध्यम से पूरी की जा सकती है। तृतीय प्रकल्प के अन्तर्गत वैदिक साहित्य से सम्बन्धित ऐसे ग्रन्थों अथवा आलोचनात्मक ग्रन्थों को जो मूलतः वैदेशिक भाषा में उपलब्ध है, उनका अनुवाद हिन्दी भाषा में कराने के लिए प्रयत्न किया जायेगा। इसके प्रकाशन का दायित्व इस विभाग का होगा। चतुर्थ प्रकल्प के अन्तर्गत यह विभाग एक सतत व्याख्यानमाला का आयोजन करेगा जिसके अन्तर्गत पाँच वर्ष की अवधि में लगभग 200 व्याख्यान

Scanned by CamScanner

कराये जा सकते है जो विषय की दृष्टि से वैदिक साहित्य के प्रत्येक बिन्दु का स्पर्श करेंगे। यह व्याख्यानमाला अति विशिष्ट होगी तथा व्याख्यान की लिखित प्रति भी मोनोग्राफ के रूप में इस विभाग के द्वारा प्रकाशित की जायेगी। इस तरह से इस विभाग के माध्यम से पाँच वर्ष के अन्दर कम से कम सौ से अधिक ग्रन्थ तथा पाचस से अधिक मोनोग्राफ प्रकाशित होंगे जिनके माध्यम से वैदिक अध्ययन एवं अनुसंधान की दिशा ही बदल जायेगी।

यह विभाग वैदिक विज्ञान केन्द्र की वेबसाइट के निर्माण के साथ-साथ वेब सामग्री का संग्रह एवं उसकी व्यवस्था की जिम्मेदारी का भी निर्वहन करेगा।

नोट – उत्तर प्रदेश शासन के द्वारा प्रेषित पत्रांक 438/57-2017-3(9)/2017 दिनांक 05 जून, 2017 के सन्दर्भ में वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभागों को संशोधित कर विषय से सम्बद्धता के आधार पर 07 प्रभागों में विभाजित किया गया है।

वैदिक विज्ञान केन्द्र के उपर्युक्त प्रभागों के माध्यम से संचालित अध्ययन एवं अनुसंधान के द्वारा शनैः शनैः वैदिक विज्ञान की विभिन्न धाराओं को समझते हुए स्वतन्त्र रूप से विभिन्न विषयों को ध्यान में रखते हुए द्वितीय चरण में वैदिक विज्ञान संस्थान को मूर्त रूप दिया जाएगा। जिसके अन्तर्गत उपर्युक्त सभी विभाग तो रहेंगे ही किन्तु आवश्यकतानुसार नये विभागों को स्थापित किया जा सकता है।

7-केन्द्र का शैक्षणिक स्वरूप-

वैदिक विज्ञान केन्द्र के लिए विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के वर्तमान संकायों के मध्य गहन सामंजस्य एवं बातचीत की आवश्यकता है, जो कि अब तक बड़े पैमाने पर नहीं हो पायी है। यद्यपि इन विभागों द्वारा अन्तविषयक अनुसन्धान कार्य किये गये हैं किन्तु वह समकाली विषयों तक ही सीमित हैं। अतः केन्द्र व्यापक स्तर पर अन्तर्विषयक अनुसन्धान का प्रबन्ध करेगा तथा कुछ प्रमाणपत्रीय एवं डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर, शोधापाधि पाठ्यक्रमों का संचालन भी करेगा। वैदिक विज्ञान केन्द्र के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अनिवार्य रूप से विभिन्न विषयों पर एक समग्र अध्ययन की आवश्यकता है, जिसकी प्राचीन भारतीय शास्त्र परम्परा में जड़ विद्यमान है। इसके अलावा भविष्य में केन्द्र को संस्थान के रूप में विस्तारित एवं विकसित करना भी इसका उद्देश्य होगा।

Scanned by CamScanner